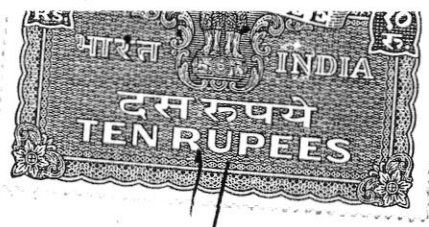


54



CF 10/11/95  
Defect

215120 MSK, M.Y. केन्द्र, उज्जैन  
न्यायालय आयुक्त-महोदय उज्जैन संभाग केन्द्र, उज्जैन

प्रकरण क्रमांक

:99-2000 अपील नं. 694-III/2000

प्राचीं/अभिभाषक श्री: अनिल शर्मा  
द्वारा प्रस्तुत  
दिनांक: 17/12/2000  
उच्च न्यायालय  
या मुद्रा कापीलम  
उज्जैन संभाग

1- बाबूलाल पिता पुनमचन्द सुनार  
निवासी ग्राम नोदनी तहसील कालापीपल -  
परगना शुजालपुर जिला शाजापुर

-----अधीनस्थ केन्द्र  
विहद

- 1- मोतीलाल पिता गट्टलालजी सोनी
- 2- रामचरण पिता पुनमचन्दजी सोनी
- 3- रामगोपाल पिता पुनमचन्दजी सोनी
- 4- रामप्रसाद पिता पुनमचन्दजी सोनी  
समस्त निवासीगण ग्राम नोदनी तहसील  
कालापीपल परगना शुजालपुर जिला -  
शाजापुर । म० प्र० ।
- 5- मध्यप्रदेश शासन द्वारा पटवारी ग्राम नोदनी  
तहसील कालापीपल परगना शुजालपुर जिला  
शाजापुर । म० प्र० ।

-----रिक्वायरेट्स  
केन्द्र

अपील अन्तर्गत धारा 20, म० राजस्व संहिता

आदेशिका दिनांक:- 27-3-2000  
अनुसार यह निगरानी सक्षम न्यायालय  
में पेश करने हेतु आवेदक के अभिभाषक  
को वापस की जाती है ।

अपर आयुक्त,  
उज्जैन संभाग, उज्जैन

97  
19-1-2000

माननीय महोदय  
अधीनस्थ  
शुजालपुर के आदेश दिनांक 18-11-99 प्रकरण क्रमांक 121:97-98 अपील  
से असन्तुष्ट स्वयं दुःखित होकर निम्नकारणों के आधार पर अपील अन्दर  
अवधि प्रस्तुत करता है :-

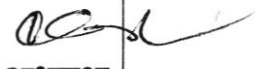
माननीय महोदय  
अधीनस्थ योग्य न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी महोदय  
शुजालपुर के आदेश दिनांक 18-11-99 प्रकरण क्रमांक 121:97-98 अपील  
से असन्तुष्ट स्वयं दुःखित होकर निम्नकारणों के आधार पर अपील अन्दर  
अवधि प्रस्तुत करता है :-

Handwritten signature

## न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर

### अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक निगरानी 694-दो/2000

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
04-07-2018	<p>1/ उभयपक्ष अधिवक्ताओं द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया तथा अभिलेख का अवलोकन किया गया।</p> <p>2/ आवेदक द्वारा यह निगरानी अनुविभागीय अधिकारी, शुजालपुर जिला शाजापुर के प्रकरण क्रमांक 121/97-98/अपील में पारित आदेश दि. 18.11.1999 के विरुद्ध इस न्यायालय में प्रस्तुत की गई है।</p> <p>3/ आवेदक द्वारा मुख्य रूप से तर्क प्रस्तुत किया गया कि अधीनस्थ न्यायालय ने अवधि बाहर आवेदन का अन्दर विधि मानकर धारा 115 के अंतर्गत कार्यवाही करने के निर्देश देने में देने में अधीनस्थ न्यायालय ने महान वैधानिक त्रुटि की है। यह भी कहा गया कि जहां पर दो पक्षकारों के मध्य विवाद है, वहां पर तहसीलदार या राजस्व अधिकारी को धारा 115 के अंतर्गत कार्यवाही करने का अधिकार नहीं है। तर्क प्रस्तुत किया गया कि निश्चित रूप से राजस्व अभिलेख में अशुद्धि संशोधन हेतु प्रार्थनापत्र अशुद्ध इन्द्राज के दिनांक से एक वर्ष की गणना अशुद्ध इन्द्राज की जानकारी के दिनांक से भी की जा सकती है।</p> <p>4/ अनावेदकगण के विद्वान अभिभाषक द्वारा मुख्य रूप से तर्क प्रस्तुत किया गया कि अनुविभागीय अधिकारी, शुजालपुर, जिला शाजापुर द्वारा पारित आदेश वैधानिक एवं उचित होने से स्थिर रखा जाकर निगरानी निरस्त की जाये।</p> <p>5/ उभयपक्ष द्वारा प्रस्तुत तर्कों एवं अभिलेख का अवलोकन किया गया। अवलोकन से स्पष्ट है कि अनुविभागीय अधिकारी ने तहसील न्यायालय द्वारा बिना कोई जांच किये आवेदक का आवेदन पत्र अवधि बाधित मानने में त्रुटि दर्शाते हुए आदेश पारित किया है। यदि जांच में उक्त आवेदन पत्र अवधि में पेश नहीं किया जाना प्रमाणित भी हो जाता है, तब भी तहसीलदार को त्रुटिपूर्ण इन्द्राज की जानकारी हो जाने के कारण धारा 115 के अधीन स्वप्रेरणा से कार्यवाही करनी चाहिए, जिसमें समयसीमा की बाधा नहीं है। अनुविभागीय अधिकारी के आदेश से यह भी स्पष्ट है कि अनुविभागीय अधिकारी ने जांच के उपरांत ही कार्यवाही करने को कहा है, क्योंकि अभिलेखों में प्रविष्टियों की न्यायहित में जांच होना उचित है। इसके प्रथम दृष्टया कारण यथा व्यवहारवाद का निर्णय आदि भी है। अतः अनुविभागीय अधिकारी द्वारा पारित आदेश वैधानिक एवं उचित है।</p> <p>6/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर अनुविभागीय अधिकारी, शुजालपुर, जिला शाजापुर द्वारा पारित आदेश दिनांक 18.11.1999 स्थिर रखा जाता है। निगरानी निरस्त की जाती है।</p>	 <b>अध्यक्ष</b>